OPEN ACCESS

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 5 Issue 1 [Jan- Feb] Year 2026*

Research Article

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन

कृपाल सिंह [1*], प्रोफेसर कमलेश कुमार चौधरी [2]

[1] शोधार्थी, शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] आचार्य (सेवानिवृत्त), शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली, उत्तर प्रदेश भारत

Corresponding Author: *कृपाल सिंह

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22131889

सारांश

आत्म सम्प्रत्यय व्यक्ति की एक धारणा है जो वह अपने बारे में रखता है। इसके द्वारा व्यक्ति स्वयं को योग्य अथवा अयोग्य मान लेता है जिसका प्रभाव उसके सारे क्रियाकलापों पर पड़ता है। उच्च स्तर के आत्म सम्प्रत्यय वाले व्यक्ति का सकारात्मक दृष्टिकोण होता है। ऐसे व्यक्तियों में आत्म विश्वास उच्च स्तर का पाया जाता है। इसके विपरीत निम्न स्तर के आत्म सम्प्रत्यय वाले व्यक्ति में नकारात्मक ऊर्जा पायी जाती है। वह कुंठा एवं हताशा का शिकार होता हो जाता है जो व्यक्तिगत हानि तथा सामाजिक हानि को संदर्भित करता है। विद्यार्थियों के सकारात्मक आत्म सम्प्रत्यय के विकास में विद्यालयों का सर्वाधिक योगदान रहता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का लिंग भेद तथा निवास क्षेत्र के आधार पर अध्ययन करना था। अध्ययन को बरेली जनपद की आँवला तहसील में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 10 में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया। शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन के माध्यम से कुल 129 विद्यार्थियों का चयन किया गया। विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के मापन हेतु डॉ. आर. के. सारस्वत द्वारा निर्मित आत्म-सम्प्रत्यय प्रश्नावली का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण का उपयोग किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया तथा संबंधित शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई। इसी प्रकार शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में भी कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया और दूसरी शून्य परिकल्पना भी स्वीकार की गई। अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि विद्यार्थियों के सकारात्मक आत्म सम्प्रत्यय के विकास के लिए समान शैक्षिक अवसर, सहयोगात्मक विद्यालयी वातावरण, प्रोत्साहन, मार्गदर्शन तथा परामर्श की व्यवस्था आवश्यक है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 02-01-2026
- **Accepted:** 22-02-2026
- **Published:** 28-02-2026
- **IJCRM:**5(1); 2026: 693-697
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सिंह कृ, चौधरी क. कु. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(1):693-697.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: माध्यमिक स्तर,विद्यार्थी, आत्म सम्प्रत्यय,लिंग भेद, क्षेत्र।

© 2026 कृपाल सिंह, प्रोफेसर कमलेश कुमार चौधरी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. परिचय

मनुष्य शिक्षा का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा के बिना सफल जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। व्यक्ति परिवार,पड़ोस, मित्र-मंडली, विद्यालय, धार्मिक समूह आदि के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करता है जिनमें विद्यालय शिक्षा प्राप्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। विद्यालयी शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति के शरीर,मन तथा आत्मा के सर्वोत्कृष्ट विकास पर बल दिया जाता है। विद्यार्थियों में सत्य,अहिंसा, अनुशासन,सदाचार,प्रेम, भाईचारा आदि सद्गुणों का समावेश किया जाता है। सरकार द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में उन्हें पारंगत करके कुशल वनाया जाता है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति की शिक्षा जीवन भर चलती रहती है। इसके आधार पर उसके विचारों में निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं।प्रत्येक व्यक्ति अपने बारे में भी विचार रखता है। मैं क्या हूं ?कौन हूं और क्या कर सकता हूं, मैं क्या नहीं कर सकता हूं, मैं बुद्धिमान हूं, मैं सुंदर हूं, मैं मेहनती हूं – आदि प्रश्न आत्म सम्प्रत्यय की नीव हैं। आत्म सम्प्रत्यय व्यक्ति की स्वयं के प्रति धारणा, विश्वास तथा दृष्टिकोण की एक जटिल संरचना है जो उसके कार्यों, सामाजिक अंतःक्रियाओं तथा उसके आत्म-चिन्तन से प्रभावित होती है।

मर्फी (1947) के अनुसार, "स्व व्यक्ति जैसा कि वह स्वयं अपने बारे में जानता है।"

एरिक्सन (1968) के अनुसार,"आत्म सम्प्रत्यय निरंतरता और सामंजस्य की वह आंतरिक भावना है जिसके द्वारा व्यक्ति यह समझता है कि वह समय और समाज के साथ कैसे जुड़ा हुआ है और उसकी व्यक्तिगत पहचान क्या है।"

रॉटर (1954) के अनुसार,"आत्म संप्रत्यय अनुभवों का एक संगठित पैटर्न है जिसमें स्वयं के बारे में अवधारणाएं, अपेक्षाएं और मूल्य शामिल होते हैं जो व्यक्ति के आंतरिक संसार को आकार देते हैं।"

आत्म सम्प्रत्यय का मनुष्य के जीवन में प्रमुख स्थान है। जब बच्चे का जन्म होता है तो उसका आत्म सम्प्रत्यय पूर्ण रूप से विकसित व संगठित नहीं होता। उसका जीवन शारीरिक आवश्यकताओं तथा संवेदनाओं पर आधारित होता है। वह अपने अस्तित्व को माता पिता तथा बाहरी दुनिया से अलग नहीं पहचानता। उसमें आत्म का विकास 16 से 24 महीने की आयु में होने लगता है और वह खुद स्वयं को दूसरों से अलग एक इकाई के रूप में समझने लगता है। 3 से 6 वर्ष की आयु में आत्म सम्प्रत्यय का तेजी से विकास होता है। इस उम्र में बच्चा अपने माता-पिता,परिवार के सदस्यों तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों की बातों के आधार पर अपने बारे में धारणा बना लेता है। यदि बच्चे को अपने आसपास के लोगों से प्रशंसा तथा गलतियों पर उचित मार्गदर्शन मिलता है तो उसमें आत्मविश्वास का विकास होता है और यदि उसे लगातार अपमान,तुलना या अत्यधिक आलोचना का सामना करना पड़ता है तो उसमें नकारात्मक आत्म सम्प्रत्यय विकसित होने लगता है।6 से 12 वर्ष की आयु के बच्चे अपने गुणों,क्षमताओं तथा भावनाओं को समझने लगते हैं तथा अन्य बच्चों के साथ अपनी तुलना करना प्रारम्भ कर देते हैं। इस आयु वर्ग के बच्चे विद्यालय जाना प्रारम्भ कर देते हैं। विद्यालय में बच्चों के आत्म सम्प्रत्यय का विकास समुचित रूप से होता है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण:-

शोधार्थी द्वारा शोधकार्य से सम्बन्धित पूर्व में संपादित किए गए शोधार्थियों के विभिन्न शोध अध्ययनों का सर्वेक्षण किया गया जिनमें प्रकाश एवं सिंह (2025) ने माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11 के छात्र एवं छात्राओं के आत्मविश्वास का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सहसम्बन्ध का अध्ययन किया। शोधकर्ता द्वारा स्टूडियो विधि से 400 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया।अध्ययन के निष्कर्ष में विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का शिक्षण उपलब्धि के साथ उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। सिंह एवं शुक्ला(2025) ने आत्म संप्रत्यय के संदर्भ में समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया। अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए 400 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। निष्कर्ष में 250 विद्यार्थियों के आत्म संप्रत्यय का स्तर औसत तथा 94 विद्यार्थियों का स्तर औसत से अधिक पाया गया। किंतु 56 विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का स्तर औसत से कम पाया गया।162 विद्यार्थियों के समायोजन का स्तर औसत तथा 132 विद्यार्थियों का समायोजन उत्तम पाया गया। 106 विद्यार्थियों के समायोजन का स्तर औसत से नीचे पाया गया। केल्स (2025) ने जम्मू जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्म संप्रत्यय का अध्ययन लिंग भेद तथा निवास क्षेत्र के आधार पर किया। अध्ययन में कक्षा 11 तथा 12 के 17-18 वर्ष की आयु वाले 200 विद्यार्थियो का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया जिसमें 110 छात्र तथा 90 छात्राएं थीं। आत्म संप्रत्यय को मापने हेतु डॉ० एस०पी०अहलूवालिया के चिल्ड्रन सेल्फ कॉन्सेप्ट स्केल का प्रयोग किया गया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष में लिंग भेद तथा निवास स्थान के आधार पर छात्र तथा छात्रों के आत्म संप्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। देवगन एवं त्रिपाठी(2024)ने शोध अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कुल 14860 विद्यार्थियों में से 800 विद्यार्थियों (400 छात्र तथा 400 छात्राएं) का चयन 10 माध्यमिक विद्यालयों से न्यादर्श के रूप में किया। निष्कर्ष के रूप में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण का उनके आत्म सम्प्रत्यय तथा शैक्षिक उपलब्धि प्रेरणा दोनों पर सार्थक रूप से प्रभाव पाया गया। डाला एवं कडियन (2023) ने हरियाणा राज्य के सोनीपत जिले के माध्यमिक विद्यालयों के किशोर विद्यार्थियों के आत्म संम्प्रत्यय तथा आत्मविश्वास के संबंध का अध्ययन किया।अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करके कक्षा 10 के 50 किशोर विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक विधि से किया।आत्म संम्प्रत्यय का मापन डॉ०एस०पी०अहलूवालिया के सेल्फ कॉन्सेप्ट मापनी से तथा आत्मविश्वास का मापन डॉ० मधु गुप्ता और बिंदिया लखानी के सेल्फ कॉन्फिडेंस मापनी से किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण माध्य, मानक विचलन,तथा पीयरसन सहसम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष में छात्र तथा छात्राओं के आत्म संप्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अध्ययन में यह भी पाया गया कि छात्राएं पारस्परिक संबंधों में छात्रों की अपेक्षा अधिक आत्मविश्वासी थी। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष में आत्म संप्रत्यय और आत्मविश्वास के बीच सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। कुमारी एवं सुमन(2022) ने माध्यमिक विद्यालयों के 500 विद्यार्थियों(262 अंग्रेजी माध्यम तथा 238 हिंदी माध्यम)का यादृच्छिक विधि से चयन करके आत्म सम्मान एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष में अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान तथा शैक्षिक उपलब्धि का स्तर हिंदी मध्यम वाले विद्यार्थियों से बेहतर पाया गया। इसी के साथ आत्म-सम्मान तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। दलाल,एस० एवं के०(2022)ने माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में से

© 2026 कृपाल सिंह, प्रोफेसर कमलेश कुमार चौधरी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

100 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया। शोधार्थी ने व्यक्तित्व का मापन करने के लिए आइजेंक की मानकीकृत आइजेंक पर्सनालिटी प्रश्नावली (1985) तथा आत्म सम्प्रत्यय का मापन हेतु श्रीमती प्रतिभा देव द्वारा विकसित स्व अवधारणा रेटिंग स्केल (1998) का प्रयोग किया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन,टी- परीक्षण और सही संबंध का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणाम के रूप में माध्यमिक स्तर विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय तथा व्यक्तित्व में कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया। सिंह(2022) ने विद्यार्थियों के आत्म संम्प्रत्यय तथा जिज्ञासा प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन , तथा टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष के रूप में माध्यमिक स्तर के छात्र तथा छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय तथा जिज्ञासा प्रवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया। मोनिका एवं अन्य (2021) ने हरियाणा राज्य के झज्जर जिले के सीबीएसई बोर्ड के माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत कक्षा 9 के विद्यार्थियों के आत्म संप्रत्यय तथा सामाजिक कौशलों का अध्ययन किया। अध्ययन के लिए सांख्यिकीय तकनीक माध्य,मानक विचलन तथा टी टेस्ट का प्रयोग किया गया। आत्म संप्रत्यय के मापन हेतु डा० आर० के० सारस्वत की सेल्फ कॉन्सेप्ट प्रश्नावली (2010)तथा सामाजिक कौशलों की मापन हेतु मनजीत कुमारी की सोशल स्किल्स रेटिंग स्केल(2019) का प्रयोग किया गया। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष में छात्र-छात्राओं के लिंग भेद के आधार पर आत्म सम्प्रत्यय तथा सामाजिक कौशल दोनों में सार्थक अंतर पाया गया। छात्रों का आत्म संप्रत्यय का स्तर अधिक था जबकि छात्राओं ने सामाजिक कौशल छात्रों की तुलना में बेहतर पाए गए। अग्रवाल एवं तियोतिया(2019) ने सर्वेक्षण विधि से दिल्ली (NCR) के 16 माध्यमिक विद्यालयों से 400 विद्यार्थियों(200 छात्र तथा 200 छात्राएं) का चयन करके आत्म-संप्रत्यय का अध्ययन किया। आत्म संप्रत्यय के मापन हेतु डॉक्टर पी ० के० गोस्वामी द्वारा विकसित स्वत्व वोध परीक्षण का उपयोग किया गया। अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि विद्यार्थियों के लिंग तथा विद्यालयों के प्रकार (सरकारी एवं पब्लिक विद्यालय)के आधार पर विद्यार्थियों की आत्म संप्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं था। जबकि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों का आत्म संप्रत्यय ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय की अपेक्षा बेहतर था। छात्राओं का सामाजिक-आर्थिक आत्म संप्रत्यय छात्रों के आत्म सम्प्रत्यय कीअपेक्षा बेहतर था।

2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व:-

आत्म सम्प्रत्यय का मानव जीवन में प्रमुख स्थान है। एक उच्च स्तर के आत्म सम्प्रत्यय वाला व्यक्ति जीवन में सफलताएं अर्जित करता है। विद्यार्थी जीवन में आत्म सम्प्रत्यय का तेजी से विकास होता है। आज के विद्यार्थी के सामने बहुत सी चुनौतियां हैं। वह तीव्र प्रतिस्पर्धा,तकनीकी परिवर्तन,परीक्षा का दबाव,सामाजिक अपेक्षाओं, रोजगार के अवसरों में कमी, उचित निर्देशन का अभाव आदि समस्याओं से गुजर रहा है। किशोरावस्था जीवन का महत्वपूर्ण पड़ाव है। इस अवस्था में विद्यार्थी द्वारा लिए गए निर्णय उसके जीवन की दिशा और दशा का निर्धारण कर देते हैं। सकारात्मक आत्म सम्प्रत्यय से विद्यार्थियों में केवल शैक्षिक प्रगति ही नहीं होती बल्कि आत्मविश्वास, सामाजिक परिपक्वता, भावनात्मक परिपक्वता,निर्णय लेने की छमता, व्यावसायिक परिपक्वता में भी विकास होता है। उच्च स्तर के आत्म सम्प्रत्यय वाले विद्यार्थी समायोजन करने में कुशल होते हैं। ऐसे विद्यार्थियों का केवल व्यक्तिगत विकास ही नहीं होता बल्कि बेस समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उचित आत्म सम्प्रत्यय के अभाव के कारण विद्यार्थी चिंता, हीन भावना, निराशा तथा असुरक्षा के शिकार हो जाते हैं जिससे उनके व्यक्तित्व पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसे विद्यार्थी असफलता असफलता से डरने लगते हैं और चुनौतियों का सामना करने में स्वयं को सक्षम नहीं पाते हैं। वर्तमान समय में विद्यार्थीयों में शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा, परीक्षा का डर, भविष्य की चिंता, परिवार एवं समाज की अपेक्षाएं आदि समस्याएं दृष्टिगोचर होती हैं। ये समस्याएं विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व के विकास में बाधक हैं। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी भी इन समस्याओं से अलग नहीं हैं। माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के साथ-साथ अन्य व्यक्तित्व के पक्षों जैसे -नैतिकता, रचनात्मकता, नेतृत्व, सहयोग, आदि के विकास हेतु महत्वपूर्ण प्रयास किया जा रहे हैं। सम्बन्धित साहित्य के अवलोकन करने के पश्चात तथा विद्यार्थियों पर विभिन्न कारकों के प्रभाव को देखते हुए माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन करना आवश्यक प्रतीत होता है।

इसी आवश्यकता को देखते हुए शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन शोध कार्य का विषय बनाया।

समस्या कथन:-

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन

प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण:-

1. **माध्यमिक स्तर:-** माध्यमिक स्तर से अभिप्राय उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त ऐसे विद्यालयों से है जो कक्षा 9 से 12 की शिक्षा संपादित करते हैं।
2. **विद्यार्थी:-** विद्यार्थी से अभिप्राय माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 10 में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से है।
3. **आत्म सम्प्रत्यय:-** आत्म सम्प्रत्यय से अभिप्राय किसी व्यक्ति द्वारा अपने बारे में विभिन्न विश्वासों, धारणाओं भावनाओं तथा मूल्यांकन से बनी उसकी मानसिक छवि से है।

3. अध्ययन के उद्देश्य: -

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का लिंग भेद के आधार पर आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन करना।
2. शहरी क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन करना।

शोध कार्य हेतु शून्य परिकल्पनाएँ:-

अध्ययन के उद्देश्य के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया:-

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत् विद्यार्थियों के लिंग भेद के आधार पर आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. शहरी क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

© 2026 कृपाल सिंह, प्रोफेसर कमलेश कुमार चौधरी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अध्ययन का सीमांकन:-
प्रस्तुत अध्ययन को बरेली जनपद की तहसील आंवला के क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश से मान्यता प्राप्त माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 10 के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

अध्ययन विधि:- शोधार्थी ने प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या:- प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या से तात्पर्य बरेली जनपद की तहसील आंवला में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से मान्यता प्राप्त माध्यमिक स्तर के सभी विद्यालयों में अध्यनरत् कक्षा 10 के सभी विद्यार्थियों से है।

न्यादर्श तथा न्यादर्श चयन विधि:- प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से दो स्तरों पर किया गया। प्रथम स्तर पर आंवला तहसील में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में से 10% विद्यालयों का चयन क्रमागत प्रतिचयन विधि से किया गया। द्वितीय स्तर पर सर्वेक्षण के दिन चयनित विद्यालयों के कक्षा 10 के उपस्थित विद्यार्थियों में से 25% विद्यार्थियों का चयन क्रमागत प्रतिचयन विधि से किया गया। इस प्रकार कुल 129 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

शोध उपकरण:- प्रस्तुत शोध कार्य में मानकीकृत शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है। विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के मापन हेतु डॉ आर०के० सारस्वत की आत्म-सम्प्रत्यय प्रश्नावली (SCQ) का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ :- प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन तथा टी- परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण :-
परिकल्पना संख्या 01

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्यनरत् विद्यार्थियों के लिंग भेद के आधार पर आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 01

आत्म सम्प्रत्यय	प्रतिदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी-मान
छात्र	66	128.40	12.30	2.00	1.08
छात्रायें	63	126.25	10.32		
N	**129**	**2.15**			

सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मान 1.96, परिणाम- अन्तर सार्थक नहीं
तालिका संख्या 01 के अनुसार माध्यमिक स्तर के 66 छात्र एवं 63 छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन किया गया। छात्रों के आत्म सम्प्रत्यय का मध्यमान 128.40 तथा मानक विचलन 12.30 है, जबकि छात्राओं का मध्यमान 126.25 तथा मानक विचलन 10.32 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमान में 2.15 का अंतर पाया गया। मानक त्रुटि 2.00 तथा टी-मान 1.08 प्राप्त हुआ, जो 0.05 सार्थकता स्तर के निर्धारित मान 1.96 से कम है। अतः छात्रों एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसलिए संबंधित शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि वर्तमान शैक्षिक परिवेश में छात्र एवं छात्राओं को समान शैक्षिक अवसर, पारिवारिक सहयोग, विद्यालयी सुविधाएँ तथा सामाजिक सहभागिता के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। दोनों समूह समान पाठ्यक्रम, शिक्षण अधिगम परिस्थितियों तथा--पाठ्यक्रम गतिविधियों से जुड़े होने के कारण उनके आत्म-सह ल्यांकनूम, आत्मविश्वास और स्वयं के प्रति धारणा में विशेष भिन्नता विकसित नहीं हुई। फलतः लिंग के आधार पर आत्म सम्प्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
परिकल्पना संख्या 02
शहरी क्षेत्र तथा ग्रामीण क्षेत्र में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 02

आत्म सम्प्रत्यय	प्रतिदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	टी-मान
शहरी	59	128.40	12.30	2.02	1.06
ग्रामीण	70	126.25	10.32		
N	**129**	**2.15**			

सार्थकता स्तर 0.05 पर तालिका मान 1.96, परिणाम- अन्तर सार्थक नहीं तालिका संख्या 02 से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के 59 विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का मध्यमान 128.40 तथा मानक विचलन 12.30 है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र के 70 विद्यार्थियों का मध्यमान 126.25 तथा मानक विचलन 10.32 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमान में 2.15 का अंतर है। मानक त्रुटि 2.02 तथा क्रान्तिक अनुपात 1.06 है, जो 0.05 सार्थकता स्तर के निर्धारित मान 1.96 से कम है। अतः शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं है और शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। इसका संभावित कारण दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अवसर, पारिवारिक सहयोग, सामाजिक सम्पर्क तथा संचार एवं तकनीकी सुविधाओं की उपलब्धता हो सकती है, जिससे उनके आत्म सम्प्रत्यय में उल्लेखनीय अंतर विकसित नहीं हुआ।
इस परिणाम का संभावित कारण यह हो सकता है कि वर्तमान समय में शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों को शिक्षा, संचार माध्यमों, डिजिटल संसाधनों तथा सह पाठ्यक्रम गतिविधियों के लगभग समान-अवसर प्राप्त हो रहे हैं। विद्यालयों में समान पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धतियों और मूल्यांकन व्यवस्था के कारण दोनों समूहों के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्म मूल्यांकन तथा स्वयं के प्रति सकारात्मक धारणा-का विकास समान रूप से होता है। इसके अतिरिक्त परिवार, शिक्षक एवं सहपाठियों से मिलने वाला सहयोग भी उनके आत्म सम्प्रत्यय को प्रभावित करता है। इसलिए निवास क्षेत्र का विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पाया गया।

© 2026 कृपाल सिंह, प्रोफेसर कमलेश कुमार चौधरी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4. निष्कर्ष

- माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया; अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई।
- शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया; अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की गई।

शैक्षिक उपयोगिता :-

अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय में लिंग तथा निवास क्षेत्र के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। यह परिणाम शिक्षा व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रस्तुत करता है कि विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के विकास में केवल लिंग अथवा शहरी-ग्रामीण पृष्ठभूमि को निर्णायक कारक न मानकर उनकी व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं विद्यालयी परिस्थितियों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। विद्यालयों में छात्र एवं छात्राओं को समान शैक्षिक अवसर, नेतृत्व की जिम्मेदारियाँ, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सहभागिता तथा अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ भेदभावरहित एवं प्रोत्साहनपूर्ण व्यवहार करते हुए उनके आत्मविश्वास, आत्मसम्मान तथा सकारात्मक आत्मधारणा को विकसित करना चाहिए। ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में परामर्श, डिजिटल संसाधन, पुस्तकालय, खेल तथा रचनात्मक गतिविधियों की समान उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। साथ ही, कम आत्म सम्प्रत्यय वाले विद्यार्थियों की पहचान कर व्यक्तिगत मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रदान किया जाना चाहिए। इस प्रकार समावेशी, सहयोगात्मक एवं समानतापूर्ण विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के संतुलित व्यक्तित्व तथा सकारात्मक आत्म सम्प्रत्यय के विकास में सहायक हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल एम, तियोतिया एके. सेल्फ कॉन्सेप्ट ऑफ सेकेंडरी लेवल स्टूडेंट्स इन दिल्ली (NCR). जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजी एंड इनोवेटिव रिसर्च (JETIR). 2019;6(2):693-702.
2. एरिक्सन ईएच. आइडेंटिटी: यूथ एंड क्राइसिस. न्यूयॉर्क: डब्ल्यू डब्ल्यू नॉर्टन एंड कंपनी; 1968.
3. कपिल एचके. अनुसंधान विधियाँ (व्यवहारपरक विज्ञानों में). आगरा: भार्गव बुक हाउस; 2015.
4. दलाल एस, के. ए स्टडी ऑफ सेल्फ कॉन्सेप्ट ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू पर्सनैलिटी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी. 2022;10(3):1349-54.
5. गुप्ता एपी, गुप्ता ए. उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान: सिद्धांत एवं व्यवहार. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन; 2018.
6. देवगन एस, त्रिपाठी एल. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय एवं शैक्षिक उपलब्धि प्रेरणा पर आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण के प्रभाव का अध्ययन. अनुसंधानवल्लरी. 2024;2024(1). ISSN: 2229-3388.
7. डाला एस, कडियन एस. ए स्टडी ऑफ सेल्फ कॉन्सेप्ट इन रिलेशन टू सेल्फ कॉन्फिडेंस अमंग एडोलसेंट्स स्टूडेंट्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेटिव साइंस, इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी. 2023;10(6):34-40.
8. केल्स एमजेड. ए स्टडी ऑफ सेल्फ-कॉन्सेप्ट अमंग स्टूडेंट्स ऑफ हायर सेकेंडरी स्कूल ऑफ जम्मू डिस्ट्रिक्ट. इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (IJMR). 2025;7(5):1-13.
9. कुमारी वी, सुमन एस. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नोबेल रिसर्च एंड डेवलपमेंट. 2022;7(4):1055-62.
10. प्रकाश आर, सिंह टी. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का शिक्षण उपलब्धि के साथ संबंध का अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन साइंस, कम्युनिकेशन एंड टेक्नोलॉजी. 2025;12(5).
11. मोनिका, अन्य. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा एवं सामाजिक कौशल का तुलनात्मक अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट. 2021;8(10):61-3.
12. मर्फी जी. व्यक्तित्व: उत्पत्ति और संरचना के लिए एक जैव-सामाजिक दृष्टिकोण. न्यूयॉर्क: हार्पर एंड ब्रदर्स; 1947.
13. रॉटर जेबी. सोशल लर्निंग एंड क्लिनिकल साइकोलॉजी. न्यूयॉर्क: प्रेंटिस-हॉल; 1954.
14. सिंह एम. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय एवं जिज्ञासा प्रवृत्ति का अध्ययन. अभिनवधारा इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेशन इन इंडिक स्टडीज. 2022;1(2).
15. सिंह राए, शुक्ल पी. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन. शिक्षा संवाद. 2025;3(2):105-13.
16. सिंह आरके, शुक्ला ए. उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय के संदर्भ में समायोजन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज, कॉमर्स एंड एजुकेशन. 2025;4.
17. Shodhganga. New Delhi: INFLIBNET Centre. Available from: www.shodhganga.inflibnet.ac.in
18. Google. Available from: www.google.com
19. Google Scholar. Available from: scholar.google.com

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

कृपाल सिंह महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश के शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय में शोधार्थी हैं। उनका शैक्षणिक एवं शोध कार्य शिक्षा, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास तथा शैक्षिक मनोविज्ञान से संबंधित विषयों पर केंद्रित है। वे शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान एवं अकादमिक गतिविधियों में सक्रिय रुचि रखते हैं।

प्रोफेसर कमलेश कुमार चौधरी महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश के शिक्षा एवं सहबद्ध विज्ञान संकाय के सेवानिवृत्त आचार्य हैं। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में दीर्घकाल तक अध्यापन, शोध एवं अकादमिक मार्गदर्शन प्रदान किया है। उनका शैक्षणिक योगदान शिक्षा, शिक्षाशास्त्र, शोध एवं शिक्षक-प्रशिक्षण से संबंधित विषयों में उल्लेखनीय रहा है।

© 2026 कृपाल सिंह, प्रोफेसर कमलेश कुमार चौधरी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/